आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार

दैनिक भास्कर

Jalandhar 17.06.2016

कब के बिछड़े आज मिले | 1971 और 1988 में परिवार से संपर्क हुआ, लेकिन मुलाकात नहीं, मुंबई की संस्था श्रद्धा पुनर्वास ने कराया मिलन

मां की डांट पर घर से भागे इंद्रजीत को 54 साल बाद परिवार से मिलाया

रवि रौणखर | जालंधर

बात मार्च 1962 की है। तब भारत चीन युद्ध भी नहीं हुआ था जब साढ़े 13 साल का इंद्रजीत घई मां इंद्रावती की डांट के बाद घर से भाग गया था। घरवालों ने बहुत ढूंढा लेकिन उसका कोई पता नहीं चला। 16 जून 2016 को 54 साल बाद वह घर लौटा है। 12 मार्च 2016 को मुंबई की एक संस्था श्रद्धा पुनर्वास में पुलिस एक वृद्ध को लेकर आई। वह सड़क किनारे बदहाल हालत में मिला था। याददाश्त जा चुकी थी।

संस्था के मनोवैज्ञानिकों ने उसका इलाज किया और याददाश्त वापस आने लगी। नोवैज्ञानिक शैलेश कुमार शर्मा ने बताया कि इन्होंने पहले अपना नाम बताया। फिर पिता और तीन भाइयों का। कुछ दिनों बाद बताया कि घर जालंधर के बस्ती शेख में हैं। इंद्र का मानसिक स्वास्थ ठीक नहीं है। उसकी दवाएं चल रही हैं।

इंद्र को शैलेश जब बस्ती शेख लेकर पहुंचे तो एक दुकान पर उसके पिता करमचंद घई के बारे में पूछा। दुकानदार ने कहा वह तो 1972 में ही गुजर गए। उनके बेटे कोट मोहल्ले में रहते हैं। पता पूछते-पूछते घर पहुंचे तो शैलेश ने घर का दरवाजा खटखटाया। दरवाजा इंद्र के बड़े भाई भीम सेन की पत्नी ऊषा घई ने खोला। शैलेश ने कहा इनका नाम इंद्र घई है क्या आप इन्हें जानती हैं।

ऊषा ने बताया कि 'मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि सामने खड़ा शख्स इंद्र ही है। मेरी शादी के कुछ साल पहले ही तो इंद्र गायब हुआ था।' भाई भीम सेन ने देखा तो वह फूट फूट कर रोने लगे। कहा-माता पिता इंद्र के गम में ही जल्दी चल बसे।' दूसरे भाई सुंदर सेन ने बताया कि इंद्र बचपन से बहुत लड़ाका था। इसे सब अस्त्र कहते थे। पढ़ाई में ध्यान नहीं लगा तो पिताजी ने चाय की दुकान पर नौकरी पर लगवा दिया। आए दिन उसकी मारपीट की शिकायतें आने लगीं और माता पिता से डांट खाने लगा। फिर एक दिन वह चला गया। 9 साल बाद 1971 में भारत पाक युद्ध में इसकी एक चिट्ठी आई थी। जिसमें उसने लिखा था कि उसने एक क्रिश्चियन लड़की से शादी कर ली है और दो बच्चे भी हैं। हम तुरंत मुंबई भाग गए लेकिन उस पते पर वह नहीं मिला। फिर 1988 में हमें एक चिट्ठी मिली। जिसके बीच इंद्र का पासपोर्ट था जो 29 दिसंबर 1983 को इशू हुआ था। पासपोर्ट पर पक्का पता जालंधर का ही लिखा था। हमने पासपोर्ट भेजने वाले से संपर्क किया तो उसने कहा कि उसे यह गिरा हुआ मिला था। हम फिर मुंबई गए। उसका पता मिल गया लेकिन एक बार फिर हमें निराशा हुई। वह वहां से जा चुका था।' हम उसके पते पर अपना टेलीफोन नंबर छोड़ गए थे। उसका थोड़े दिनों बाद फोन आया।

उसने बताया कि वह एक सेठ के वहां ड्राइवर है। हमने कहा वापस जालंधर आ जाओ तो उसने फोन काट दिया। उसके बाद हमें न कोई चिट्ठी आई न टेलीफोन। पिछले महीने मैं सोच रहा था कि दोबारा मुंबई होकर आता हूं शायद जीते जी उससे एक बार मुलाकात हो जाए। भगवान ने हमारी सुन ली और वह आज खुद हमारे पास आ गया है।'

इंद्र घई बताते हैं कि मुंबई में ही शादी की पर दंगों में परिवार बिछुड़ गया

बड़े भाई भीम सेन, सुंदर सेन और भाभी ऊषा घई व परिवार के अन्य सदस्यों के साथ पीली टी शर्ट में इंद्रसेन घई। -भास्कर

पत्नी के बारे में पूछा तो कहा उसकी शादी एलिजाबेथ से हुई है। 'मुंबई में झगड़ा हुआ था। हिंदू मुस्लिम में। उसमें बिछुड़ गए। इससे ज्यादा वह उनके बारे में नहीं जानता। इंद्र ठीक से चल फिर नहीं सकता।